त्रियA पत्रिKA

हाइकु व लघु कविताओं की पत्रिका

तेजी सेठी

संकल्पना, कवर व आतंरिक डिज़ाइन

वैभव जोशी

सम्पादन (लघु कवितायें)

तेजी सेठी, प्रीती चाहर

सम्पादन व अनुवाद (हाइकु)

हर दिन एक यात्रा है, और यात्रा ही घर है

– मात्सुओ बाशो

त्रिया पत्रिका ~ नवम्बर | दिसम्बर २०२१ ~ प्रथम संस्करण

यह हाइकु इंग्लिश लैंग्वेज जर्नल्स में प्रकाशित कृतियाँ हैं, जर्नल्स के नामों का लिप्यन्तरण किया गया है। टीम त्रिया ने अनुवाद करते वक़्त इस बात का विशेष ध्यान रखा है - मूल हाइकु के सार को बनाए रखा जा सके। अनुवाद व प्रकाशन में हुई त्रुटियों के लिए टीम त्रिया क्षमा प्रार्थी है। मूल कृतियों का कॉपीराइट कवि का है, त्रिया केवल इन्हें अनुवाद कर प्रकाशित करने का स्वामित्व रखती है।

कॉपीराइट त्रिया

सम्पादक की कलम से

त्रिया के पहले संस्करण में आपका हार्दिक स्वागत है!

हाइकु से मेरी मुलाकात हाल ही में हुई - कुछ चार वर्ष पहले जब मैंने कथा नेशनल रायटर्स वर्कशॉप, नयी दिल्ली में प्रसिद्ध हाइकु कवि व त्रिवेणी हाइकाई इंडिया की संस्थापक, कला रमेश का काव्य संग्रह 'बियॉन्ड द होराइजन बियॉन्ड' पढ़ा।

उनके संग्रह के हाइकु छंदों की गहराई में मुझे बचपन में पढ़े दोहे और छंदों की प्रतिध्वनि सुनाई दी। इसके तुरंत बाद, मैं त्रिवेणी, हाइकु समूह में शामिल हो गयी और कला से हाइकु और तनका शैली में लिखने का ज्ञान प्राप्त किया। मेरा हाथ थामने और मुझे इस चिंतनशील शैली से परिचय करवाने के लिए, मेरी गुरु कला रमेश के प्रति मेरी गहरी कृतज्ञता!

२०१९ में मैंने अपनी हाइकाई कृतियाँ प्रकाशित करना आरम्भ किया और हाईकाई जगत में अपनी पहचान बनानी शुरू की। सादगी और जीवन के सत्य 'मकोतो' से सजी इस शैली ने मुझे अपने आस पास की दुनिया को एक नए नज़रिए से देखने का अवसर दिया। गत तीन वर्षों में मैंने यह पाया की भारतीय हाइकु कवियों ने कविता जगत में काफी ख्याति प्राप्त की है परन्तु हिंदी भाषा में लिखने वाले हाइकु कवि काफी कम संख्या में हैं। उस वक़्त त्रिया का जन्म हुआ! मेरा यह सतत प्रयास रहेगा की टीम त्रिया 'इंग्लिश लैंग्वेज हाइकु को अनुवादित कर ज्यादा से ज्यादा हिंदी पाठकों तक पहुँचाने में सफल रहे और त्रिया के द्वारा हिंदी में हाइकु लिखने कवियों को अपनी कविताएँ प्रकाशित करने का माध्यम मिल सके!

~ तेजी

हाइकु व सेनर्यु

जापानी कविता के सरल तीन पंक्ति वाले रूप को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा गया है - एक सौंदर्य छवि को व्यक्त करने के लिए, दूसरा प्रकृति, सृजन और परिवर्तन की सराहना करने के लिये। हाइकु हमें हर क्षण का जन्म और अंत दर्शाती है। जापानी सौंदर्यशास्त्र में, कला की सुंदरता को व्यक्त करने के लिए अपूर्णता, और नश्वरता (वाबी साबी) को परिभाषित किया जाता है। हाइकु इसकी सबसे उपयुक्त अभिव्यक्ति है।

भारत में हाइकु को एक बड़े पाठक समूह तक पहुंचाने के उद्देश्य से त्रिया पत्रिका का सृजन किया गया है। इस पत्रिका में सम्मिलित हाइकु विश्व की कुछ प्रमुख हाइकु पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं का हिन्दी अनुवाद है। हमारा मानना है कि त्रिया का यह प्रयास हाइकु का स्थान हिंदी मुख्य धारा की कविताओं के मध्य बनाने में सहायक होगा।

कवि चौपाल

कला रमेश

अमृता प्रभु

नीना सिंह

रवि किरण

श्लोका शंकर

वंदना पराशर

लक्ष्मी अय्यर

सुबीर निन्थोउजा

ऋचा शर्मा

प्रीती आइसोला

देवश्रुती मंडल

विजय प्रसाद

गीताश्री चटर्जी

आर सुरेश बाबू

संजुक्ता आसोपा

काशियाना सिंह

ऋतु त्यागी

राहुल जगताप 'देव'

अंधारे विशाल किशनराव

रीना सिन्हा

निमिषा सिंघल

रमेश धोरावत

निवेदिता भावसार

वैभव जोशी

प्रीती चाहर

कला रमेश

पुषकार्ट पुरस्कार नामांकित, काला रमेश त्रिवेणी गुरुकुलम मेंटरशिप प्रोग्राम २०२१ की निदेशक हैं; वह नाद अनुनाद हाइकु अन्थोलोजी की मुख्य संपादक हैं! उनकी पुस्तक **बियॉन्ड द होराइजन बियॉन्ड** को रवींद्रनाथ टैगोर लिटरेरी पुरूस्कार के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया था। हार्परकॉलिंस इंडिया द्वारा प्रकाशित, **द फारेस्ट आई नो** उनकी नवीनतम पुस्तक है। कला २०११ से सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी में ६० घंटे का हाइकाई कोर्स पढ़ा रही हैं। हाइकु को रोजमर्रा के स्थानों पर लाने के लिए, उन्होंने कई परियोजनाओं की शुरुआत की और भारत में आठ हाइकाई उत्सवों का आयोजन किया।

राग में तल्लीन
गायक को चौंकाता
तालियों का गर्जन

हाइकु इन इंगलिश: द फ़र्स्ट ह्यून्द्रेड इयर्स. डबलयु डबलयु नॉर्टन कंपनी २०१६

देवी का मंदिर ...
चींटियों के साथ नंगे पाँव
प्रवेश करती मैं

स्केच बुक,मई २००८

पारिजात के फूल...
बचपन में पेड़ हिलाना
बारिश की बूंदों के लिए

कला की पुस्तक बियॉन्ड ते होराइजन बियॉन्ड से, २०१७

अमृता प्रभु

अमृता प्रभु, एक कंप्यूटर इंजीनियर हैं जिन्होंने अपनी उम्र के तीसरे दशक के मध्य में कविताओं और कला के प्रति अपने प्रेम की खोज की। प्रकृति प्रेमी और खाना पकाने की शौकीन अमृता भारतीय होने पर स्वयं को भाग्यशाली मानती हैं और अपनी समृद्ध संस्कृति और विरासत को महत्व देती हैं। कला और कविताओं के लिए उनका प्यार उन्हें हाइकु , हाइगा और जापानी रूपों के संबंधित कविता के करीब ले कर गया। उनकी कई रचनाएँ प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। वह जीवन को जीने लायक बनाने वाले क्षणों के बारे में छोटे हैप्पी नोट्स बनाती हैं । उनका मानना है कि ८० साल की उम्र में, वह इन छोटे हैप्पी नोट्स को संजो रही होंगी।

पहाड़ बनाते
पहाड़ पिघलाते
मेरे विचार

द हाइकु डाईलॉग अगस्त १८, २०२१

करवा चौथ
उसे इंतज़ार करवाता
चाँद

द पोएट्री पी जर्नल समर २०२१

सर्दी की एक ठहरी हुई रात
अब भी काम करते
घड़ी और मैं

द क्रेअत्रिक्स ५४, सितम्बर २०२१

नीना सिंह

नीना एक बैंकर व कवि हैं, उनकी हाइकु, सेनर्यु, तनका, चेरिता, हाइगा और रेंगा को नियमित रूप से पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता रहा है। उन्होंने कविता की दो पुस्तकें स्वयं प्रकाशित की हैं – **विस्पर्स ऑफ द सोल - द जर्नी विदिन व वन ब्रेथ पोएट्री** । वह वंचित बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए एक गैर-लाभकारी संस्था चलाती हैं।

शरद ऋतु की शाम
एक पुराने दोस्त का हाथ
मेरे हाथ में

अप्रैल २०२१, हाइकु फाउंडेशन की मासिक कुकाई में "ट्रस्ट" विषय पर तृतीय पुरस्कार विजेता

मेरे सपने के
तारों को छूती
रात की नदी

मॉडर्न हाइकु अंक ५२.२, जून २०२१

अमावस्या –
माँ की कहानी अभी तक
अधकही

प्रेसेंस अंक #६८, फॉल २०२०

रवि किरण

रवि पेशे से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर प्रोफेशनल हैं। सब कुछ जापानी - बोनसाई से ले कर जापानी रसोई के साधन उन्हें अकर्षित करते हैं। हाइकु - रवि के लिए एक यात्रा है, जिसे वह अपने पेशेवर दिनचर्या के बीच में तनाव से मुक्ति का एक साधन मानते हैं। रवि की हाइकु कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

उलझा हुआ
पवन झंकार
मौन

वर्ल्ड हाइकु रिव्यु होनोरेबल मेंशन २०२१

शाम का खाना ...
यह कड़वा स्वाद
एकांत का

कैट टेल्स विंटर २०२१

पगडंडी का अंत
हवा फिर भी बह रही है
देवदार के मध्य

द हेरॉनस नेस्ट सितम्बर २०२१

श्लोका शंकर

श्लोका शंकर एक कवि व विज़ुअल आर्टिस्ट हैं जो बैंगलोर में रहती हैं। सर्वश्रेष्ठ नेट नामांकन, व पुरस्कार विजेता हाइकु कवि श्लोका सोनिक बूम और इसकी इंप्रिंट यावनिका प्रेस की संस्थापक व संपादक हैं । **वह पॉइंट्स ऑफ़ अराएवल** (ओरिगामी पोयम्स प्रोजेक्ट,२०२१), हाइकु की एक माइक्रोचैप की लेखक हैं ।

वेबसाइट: www.shlokashankar.com

ग्रामोफोन इस बारिश के सुर और ताल

२०१४ में अंडर द बाशो, वन-लाइन हाइकु सेक्शन के तहत प्रकाशित

कहने को बहुत कुछ पतझड़ की चुप्पी नदी के किनारे

फ्रेमलेस स्काई अंक # ९ में प्रकाशित

युद्ध और कौवे: अनुवाद में खो जाना

फेल्ड हाइकु में एक हाइगा के रूप में प्रकाशित, अंक #१८ जून २०१७

वंदना पराशर

वंदना पराशर एक मायक्रोबायोलोजिस्ट हैं जिन्हें हाइकु लिखने में अत्यंत रूचि है | लघु शैली की तरफ उनके रुझान ने उन्हें हाइकु और जापानी कविता की ओर आकर्षित किया | उनकी कृतियाँ कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित व पुरुस्कृत हुई हैं। उनकी हाइकु को २०२१ में व्यक्तिगत कविता के लिए **टचस्टोन पुरस्कार** के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया था । उनकी पहली ई -चैपबुक **आई ऍम** २०१९ में टाईटल IX प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई थी ।

ब्रह्मा मुहूर्त
ओम के हर जाप के साथ
उठती बसंत की धुंध

असाही हैकुइस्त नेटवर्क ३० मार्च २०१८

नौ महीने का इंतजार...
मेरी हथेलियों के बीच सिमटा
पहला आम

फेम्कु मैग, अंक १ जून, २०१८

परिवार की तस्वीर
उसके सिर का हल्का झुकाव
माँ की ओर

फेल्ड हाइकु, अंक ६२ फ़रवरी २०२१

लक्ष्मी अय्यर

इस शब्दहीन कविता से मोहित लक्ष्मी अय्यर को अपने अनुभवों के माध्यम से कविताएं लिखना पसंद है। उन्होंने कला रमेश द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भाग लिया और कई प्रसिद्ध हाइकाई जर्नल्स के पन्नों में उनकी कविताओं को पाया। वह त्रिवेणी हाइकाई इंडिया से जुड़े होने में गर्व महसूस करती हैं क्यूंकि केवल यही एक ऐसी वेबसाइट है जो विशुद्ध रूप से हाइकाई के लिए बनी है।

पुनर्जागरण
वह जो मेरा नहीं है ...
गुजरते बादल

मासिक कूकई- टी एच एफ होनोरेबल मेंशन अप्रैल २०२१

सौंधेपन से तृप्त
मुठ्ठी भर धरती ...
एक शिशु का जन्म

अर्थ राइज २०२१/हाइकू फाउंडेशन

पतंग उड़ाते हुए
मेरे मन की गठानों
का सुलझना

विश्व हाइकू समीक्षा, २०१९ में जत्सुई हाइकू मेरिट सूची

सुबीर निंगथौजा

सुबीर निंगथौजा एक मध्यम आयु वर्ग के चिकित्सक हैं। वह इंफाल, मणिपुर में रहते हैं । वे मुक्त छंद लिखते थे। एक वर्ष से अधिक समय से हाइकु और संबंधित रूपों की तरफ उनका रुझान देखा गया है। वह कुछ हाइकु पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

झरना ...
एक पहाड़ गाता है
समुद्र के लिए

द हेरोंस नेस्ट, वॉल्यूम २३, नंबर २ जून २०२१

सुगन्ध युक्त
रात की हवा
झड़ना पंखुड़ियों का

एसयुज – एच: जून २०२१

शून्यता
अंधेरे में नाव चलाता
मैं

प्रेसेंस अंक ७०, जुलाई २०२१

ऋचा शर्मा

प्रकृति और साहित्य के प्रति अपने प्रेम से प्रेरित ऋचा अपने ख़ाली समय में जापानी लघु कविताएं लिखना पसंद करती हैं। उनका काम कई प्रतिष्ठित हाइकु पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है ।

बसंत की पुरवाई
सफ़ेद फूल में सिमटी
एक मकड़ी

पोएट्री पी जुलाई २०२१

हम तीनों के बीच
एक कटोरा चावल
बसंत की एक शान्त रात

हाइकु डायलाग दिसम्बर ३० २०२०

बच्चे का जन्म
हिम कणों का
पहला नृत्य

फेम्कू मैग अंक १९ २०१९

प्रीती आइसोला

प्रीति आइसोला एक लेखक हैं, उन्होंने कई संग्रह प्रकाशित किये हैं, एक उपन्यास, **सी पेरिस फॉर मी, बियॉन्ड गोपुराम्स, एक आध्यात्मिक यात्रा,** और कविता के दो संग्रह, **लेटर्स टू माया**, जो एक रचनात्मक गैर काल्पनिक शैली में लिखी गयी है, उनकी नवीनतम पुस्तक है। २०२० में उन्हें काला रमेश ने हाइकाई साहित्य से मिलवाया और इसके लिए वह अपने गुरु की बहुत आभारी हैं । उन्हें अपने गर्मदिल कवि मित्रों के समुदाय में रहना पसंद है इससे उन्हें दिन प्रतिदिन सीखने का अवसर मिलता है व उनकी ज़िन्दगी में नवीनता बनी रहती है ।

नदी किनारे बेंच
एक ढहे हुए पेड़
की लंबाई

हाइकु फाउंडेशन, हाइकु डायलॉग; २९ सितंबर, २०२१

सफ़ेद कुमुदिनी का पुष्प
यह अलसाई खुशबू
बच्चे की मुस्कान की

अंडर द बाशो जुलाई २०२०

नदी का मोड़
मिट्टी के मंदिर पर
लाल गुड़हल का एक फूल

हाइकु फाउंडेशन, हाइकु डायलॉग; मार्च २४, २०२१

देवश्रुती मंडल

देवश्रुति मंडल खुद को हाइकाई साहित्य में नौसिखिया मानती हैं, वे भारत के वाराणसी शहर में रहती हैं । हालांकि उनकी हाइकाई यात्रा २०२० में शुरू हुई, लेकिन मार्च, २०२१ से वे इस शैली की भक्त बन गयीं। हाल ही में उनकी हाइकु को सीएमजे, टीएचएफ, फेल्ड हाइकू जैसे कुछ बेहतरीन प्रकाशक मिले हैं । उनके विचारों को @trolleytalesofficial पर पढ़ा जा सकता है ।

संबंध विच्छेद
एक गुड़हल का मेरे
पास आ गिरना

पोएट्री पी जर्नल

भोर को फहराती
अज़ान
की आवाज़

कोल्ड मून जर्नल

पुराना ख़त ...
रेखांकित किये पौधे
पर खिलता एक फूल

हाइकु यूनिवर्स

विजय प्रसाद

विजय प्रसाद सीएमए हैं। वह हाइकु, साहित्य व दर्शनशास्त्र आदि को समर्पित हैं । वह विभिन्न हाइकु समूहों में एक नियमित योगदानकर्ता है और उनके काम को अंडर द बाशो, टाईनी वर्ड, फेल्ड हाइकू, मम्बा जर्नल, हाइकु डायलॉग आदि के तहत प्रकाशित किया गया है । फिलहाल वह भारत के पटना शहर में रहते हैं ।

समुद्र तट
शंख से मुक्त
एक ध्वनि

द मम्बा जर्नल १ फरवरी २०२१

सुदूर आकाश –
इस ओर भी
कुछ नहीं

फेल्ड हाइकु १ जून २०२१

पूर्ण विराम की दूसरी ओर

फेल्ड हाइकु १ अक्टूबर

गीताश्री चटर्जी

गीताश्री की कविताएं डॉ विवेकानंद झा द्वारा संपादित एक प्रतिष्ठित एंथोलोजी, **द डांस ऑफ़ द पीकॉक** और डॉ नंदिनी साहू द्वारा संपादित, **सुवर्णरेखा** में प्रकाशित हुईं हैं । लघु कहानियों का उनका एकल संग्रह **ए बास्केट फुल ऑफ़ लाइज** २०१८ में प्रकाशित हुआ । उन्होंने दिल्ली में प्रशंसित हाइकु कवि कला रमेश के साथ पहली हाइकु कार्यशाला का आयोजन किया।

रात की रानी
बचपन का एहसास
हवा में

अंडर द बाशो जर्नल ७ अगस्त २०२०

तर्क वितर्क
हम भूल जाते हैं
हम कौन हैं

अंडर द बाशो जर्नल १२ मार्च २०१९

पारिवारिक एलबम
हर पन्ने पर
एक लुप्त होती मुस्कान

क्रिएट्रिक्स हाइकू जर्नल ३९

आर सुरेश बाबू

आर सुरेश बाबू केरल के तिरुवाला के रहने वाले हैं। वह कर्नाटक के चिकमंगलूर में एक सरकारी आवासीय स्कूल में ग्रेजुएट अंग्रेजी अध्यापक के रूप में काम करते हैं। उन्होंने अपने हाइकु और सेनर्यु को विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित किया है

चींटियों को
रास्ता देते ...
जैन भिक्षु

बाशो जर्नल, २०१९ के तहत आधुनिक हाइकु अनुभाग के तहत प्रकाशित

माँ की साड़ी
के बॉर्डर पर ...
पिसे मसाले के दाग

हाइकु डायलॉग में प्रकाशित, गौरमे गैलरी – टच

श्रधांजलि वेदी पर
छूटा हुआ ...
एक मृत पुष्प

हाइकु फाउंडेशन में प्रकाशित

संजुक्ता आसोपा

संजुक्ता आसोपा एक दशक से अधिक समय से हाइकु और संबंधित रूपों को लिख रही हैं और कई प्रिंट व ऑनलाइन पत्रिकाओं में व्यापक रूप से प्रकाशित हुई हैं। वह कर्नाटक के बेलगाम शहर में शांत जीवन व्यतीत कर रही हैं ।

आकाश गंगा
असंख्य कारण
उसे प्यार करने के

शिकी कुकाई, सितंबर २०१३

बर्तन में उबलते
चावल के दाने ...
यह बारिश की आवाज़

द हेरोंस नेस्ट अंक ११.४ दिसंबर २०११

घावों के निशान
जो अब ठीक हो चले हैं...
बैंगनी एस्टर

दैनिक हाइकू, दिसंबर २०१३

काशियाना सिंह

जब काशियाना लिख नहीं रही होतीं, तो वह हर दिन अपने टेड एक्स टॉक थीम को जी रही होती हैं । वह वर्तमान में कविता संपादक के रूप में कार्य कर रही हैं । यावानिका प्रेस द्वारा उनकी चैपबुक **क्रश्ड एन्टहिल्स** १० शहरों का एक यात्रा वृतांत है । वह वर्तमान में एक नया संग्रह – **वीमेन बाय द डोर** बुन रही हैं ।

रक्त चाँद
आकाश में फैलता
उसका अकेलापन

एक और एम्बुलेंस
आकाश को निगलता
पतझड़ का जंगल

बदलता प्रकाश
उसकी आँखें, तुम्हारे गर्भ में खुलती
एक खिड़की

ओर्ब नामक हाइकु स्ट्रिंग में प्रकाशित कृति

इलस्ट्रेशन हृशिकेश शर्मा, त्रिविम में प्रकाशित

लघु कविताएँ

ऋतु त्यागी

ये लिपि

किसी स्त्री की
खुरदुरी उँगलियों की
लिपि को पढ़ना कभी
समझ ना आये
तो इतिहास में झाँकना
हो सकता है
किसी दबी हुई आह पर
उत्कीर्ण अक्षरों में
ये लिपि डबडबा जाये।

बहुमत में प्रकाशित

धुआँ

तुम्हारे भीतर
जो धुआँ है
वह तुम्हारी ही
आग का है
उसे अंदर नहीं
बाहर उठना था।

रचना उत्सव में प्रकाशित

एक गाँठ

घर के औंधा
होते ही
स्त्री
अपने हिय में
लगा लेती है
एक गाँठ।

रचना उत्सव में प्रकाशित

सम्प्रति – पी.जी.टी हिंदी केंद्रीयविद्यालय सिख लाईंस मेरठ
रचनाएँ – विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ तथा कहानियाँ प्रकाशित

राहुल जगताप 'देव'

तरस गयी आँखे, बूढ़े बरगद की
परिंदा, लौट कर, फिर न आया
प्रवासी पंछियों की, संगत होती है बुरी

त्रिविम में प्रकाशित

हमारे तुम्हारे रिश्तों की नदी बहती थी
नर्मिल, शीतल, पावन कल कल करती
पुराने खतों में ही नज़र आती है

त्रिविम में प्रकाशित

बिलख कर दीवार पर हाथ दे मारे
सारी की सारी चूड़ियाँ धंस गयी कलाई में
सरहद से, तिरंगा लपेटकर लौटा है कोई?

त्रिविम में प्रकाशित

वैभव जोशी

हर उस जगह से अदृश्य हूँ
जहाँ मैं होना चाहता हूँ
मुझे ठगते हैं
मेरे ही
अपने रूप

खरोंचे
खाली जगह बना देती हैं
उनका भरना
एक निशान छोड़
जाता है

मुझे बदलने नहीं देते
अपनी जगह नहीं छोड़ते
मेरी परछाईयों के धब्बे

मनकही में प्रकाशित

प्रीती चाहर

लफ़्ज़ जितना सुकून देते हैं
ख़ामोशी कई ज़्यादा देती है

जज़्ब करने का सही इल्म हो गर।

वक़्त के साथ गहरे होते लम्हों को
और भी धुँधला कर गयी ये बारिश

वजूद के पन्ने पे फ़क़त दास्तान रह गई।

इक आग दहकती है उम्र भर
इक चिंगारी सुलगती है कहीं

मौत सन्नाटा है, सिर्फ़ ज़िंदगी ही शोर करती है।

अंधारे विशाल किशनराव

मनुष्यता

हम कविताओं में ले आए पेड़
ले आए पहाड़, आकाश,धरती,
जल,वायु,इतिहास भूगोल और विज्ञान

मनुष्यता के कुंभकर्ण की
तब भी नहीं टूटी नींद

सोचो मनुष्यता कितनी गहरी
नींद में विचरण कर रही है,
कि उसके राक्षसी कान में
अब भी कवि की मासूम ईश्वरीय
आवाज नहीं पहुंच पा रही!

निवेदिता भावसार

रात लहरा रही थी जाने कितनी ही कविताएं
सुबह देखा तो उजड़ गयी खड़ी की खड़ी फसलें
हाह... न चर्चा हुआ ना खबर छपी
ना मिल सका मुआवजा इनका
आज फिर से एक किसान ने आत्महत्या कर ली

शब्द
कभी कंकर
कभी चना
चबा जाती हूँ दोनों ही
फर्क नहीं
मात्र शब्द ही तो है।

पथराती जा रही है नदी
तुम्हारे पहाड़ से दुःख को सहेजने में।
क्यों फेंकते रहते हो शाम ढले
अपनी खामोशियों के कंकर।

इस पथराई परत के नीचे
अब भी वही नदी बहा करती है।
बस तुम्हारे फेंके चने मछलियां खा गयी हैं
और कंकर सीपियों ने रख लिए हैं।

रीना सिन्हा

उपेक्षित

कितनी प्रतिभाएँ यूँ ही
दम तोड़ देती हैं
थे जिनपर कभी
किसी के सुन्दर सपनों के हस्ताक्षर

आज पड़ी हैं वो डिग्रियाँ
यूँ ही उदास उपेक्षित

निमिषा सिंघल

व्यक्तित्व

इमली, शहद,
और नीम
इन सभी का सम्मिश्रण है
'व्यक्तित्व'
किसमें किसकी बहुलता है
यह निर्भर करता है।

रमेश धोरावत

समय वह मृदंग है
जो जीवन को 'धोबी नृत्य' करवाता रहता है

जीवन..... आजीविका चाहता है
अब उसे तो ठुमक ठुमक कर नाचना ही है

पगलाया-सा भिड़ता रहता है
सफलता असफलता की दीवारों से

एक दिन निकल पड़ता है
नीलोत्पल की लिखी सरल रेखा में -
"मृत्यु एक सरल रेखा है"

और पहुंच जाता है अपने अंत-अनंत में।।

त्रिया पत्रिका ~ नवम्बर | दिसम्बर २०२१ ~ प्रथम संस्करण